फरीदाबाद
मजदूर समाचार
राहें तलाशने-बनाने के लिए मजदूरों के अनुभवों व विचारों के आदान-प्रदान के जरियों में एक जरिया

नई सीरीज नम्बर 231 सितम्बर 2007

बिजली का उत्पादन रात को खा गया – रात्रि को भी मनुष्यों द्वारा काम। इधर एटमी बिजलीघरों का ताण्डव पृथ्वी से जीवन मिटाने के खतरे बढा रहा है।

पहचान और पहचान की जटिलतायें (2)

"मैं" का उदय – "मैं कौन हूँ ?" – एक "मैं" में कई "मैं" – और "मैं" के पार

★ इकाई और समूह-समुदाय के बीच अनेक प्रकार के सम्बन्ध समस्त जीव योनियों में हैं। मानव योनि में भी दीर्घकाल तक ऐसा ही था। चन्द हजार वर्ष पूर्व ही पृथ्वी के छिटपुट क्षेत्रों में मानवों के बीच "मैं" का उदय हुआ। मनुष्यों के प्रयासों के बावजूद अन्य जीव योनियों के समूह-समुदाय में इकाई ने "मैं" के पथ पर प्रगति नहीं की है। ★ एक जीव योनि के एक समूह-समुदाय की इकाईयों में तालमेल सामान्य हैं पर जब-तब खटपटें भी होती हैं। एक जीव योनि के एक समूह-समुदाय के उस योनि के अन्य समूह-समुदायों के संग आमतौर पर सम्बन्ध मेल-मिलाप के होते हैं पर जब-तब खटपटें भी होती हैं। आपस की खटपटें घातक नहीं हों यह किसी भी योनि के अस्तित्व के आधारों में है। इसलिये प्रत्येक जीव योनि में यह रचा-बसा है। एक जीव योनि के अन्दर की लड़ाई में किसी की मृत्यु अपवाद है। मानव योनि के अस्तित्व के 95 प्रतिशत काल में ऐसा ही रहा है। इधर मनुष्य द्वारा मनुष्य की हत्या, मनुष्यों द्वारा मनुष्यों की हत्यायें मानव योनि को समस्त जीव योनियों से अलग करती हैं। ★ अपनी गतिविधियों के एक हिस्से को भौतिक, कौशल, ज्ञान रूपों में संचित करना जीव योनियों में सामान्य क्रियायें हैं। बने रहने, विस्तार, बेहतर जीवन के लिये ऐसे संचय जीवों में व्यापक स्तर पर दिखते हैं। प्रत्येक जीव योनि में पीढी में, पीढियों के बीच सम्बन्ध इन से सुगन्धित होते हैं। मानव योनि में भी चन्द हजार वर्ष पूर्व तक ऐसा ही था। इधर विनाश के लिये, कटुता के लिये, बदतर जीवन के लिये भौतिक, कौशल, ज्ञान रूपों में संचय के पहाड़ विकसित करती मानव योनि स्वयं को समस्त जीव योनियों से अलग करती है।

कीड़ा-पशु-जंगली-असभ्य बनाम सभ्य को नये सिरे से जाँचने की आवश्यकता है।

लगता है कि निकट भविष्य में पहचान की राजनीति का ताण्डव बहुत बढ़ेगा। मानव एकता और बन्धुत्व की सद्इच्छायें विनाश लीला को रोकने में अक्षम तो रही ही हैं, अक्सर ये इस अथवा उस पहचान की राजनीति का औजार-हथियार बनी हैं। हम में से प्रत्येक में बहुत गहरे से हूक-सी उठती हैं जिनका दोहन-शोषण सिर-माथों पर बैठे अथवा बैठने को आतुर व्यक्ति-विशेष द्वारा किया जाना अब छोटी बात बन गया है। सामाजिक जीवन के अन्य क्षेत्रों की ही तरह पहचान की राजनीति में भी संस्थायें हावी हो गई हैं। संस्थाओं के साधनों और पेशेवर तरीकों से पार पाने के प्रयासों में एक योगदान के लिये हम यह चर्चा आरम्भ कर रहे हैं।

● हमारी भाषा-सम्बन्धी अक्षमता-अयोग्यता को क्षमा कीजियेगा। जीवों-निर्जीवों से रची पृथ्वी पर लाखों-करोड़ों वर्ष से चले आ रहे अनेकानेक प्रकार के सम्बन्धों के बोलबाले में चन्द हजार वर्ष पूर्व एक महीन दरार पड़ी थी जो कि आज सब-कुछ को विनाश की देहली पर ले आई है।

अनेकानेक प्रकार के सम्बन्धों को मात्र दोहन-शोषण के रिश्तों में समेटती-सिकोड़ती प्रवृति के मानवों के चन्द समूहों में उभरने को सभ्यता का जन्म कह सकते हैं। पौराणिक कथा के सुरसा के मुँह की तरह फैलती आई सभ्यता ने पृथ्वी के पार जा कर अब अन्तरिक्ष का भी दोहन-शोषण शुरू कर दिया है।

सभ्यता की प्रगति के संग पत्थर पर प्यार की थपकी से परे होते मनुष्य प्रेम करने से ही वंचित होते आये हैं। सभ्य मानवों में प्रेम की योग्यता-क्षमता ही नहीं रहती........

1900-1920 के दौरान भी सभ्यता से परे प्रशान्त महासागर के कुछ द्विपों में निवास करते मानव समुदायों के अनुसार घड़ी ने गोरों को प्रेम करने के अयोग्य बना दिया था। आज पृथ्वी पर शायद ही कोई हों जो "गोरे" नहीं हैं.......

प्रेम का यह अकाल प्रेम-गीतों को लोकप्रियता प्रदान करता है, विकृत प्रेम को आधार प्रदान करता है। विगत के प्रेम के किस्से भी उस प्रेम की महिमा गाते हैं जो जीवन को विस्तार देने के उलट मनोरोगी सिकोड़ना, संकीर्ण बनाना लिये है। और आज मण्डी में प्रेम के भाव-तोल होते हैं, मण्डी में प्रेम-गीत बिकते हैं।

● जो मिले-जुले हैं, जो घनिष्ठ सम्बन्ध लिये हैं उन्हें अपने से अलग देखना, अपने से अलग करना, "अन्य" बनाना दोहन-शोषण के लिये प्रस्थान-बिन्दू बनता है। और, स्वयं को अपने से अलग देखना, खुद को अपने से अलग करना, स्वयं को हाँकना, खुद के तन का, मस्तिष्क का, मन का दोहन-शोषण "अन्य" से आरम्भ हुये दोहन-शोषण की परिणति है।

धरती को अपने से अलग मान कर धरती का दोहन, पेड़-पौधों को अपने से अलग कर उनका दोहन, पशु-पक्षियों व अन्य जीवों को अपने से अलग कर उनका दोहन-शोषण, एक मानव समुदाय द्वारा दूसरे मानव समुदायों को अपने से अलग मान कर, "वे-अन्य" बना कर उनका शोषण, एक मानव समुदाय में ही "मैं" और "वह" की रचना द्वारा एक-दूसरे के शोषण के आधार की स्थापना, और फिर "मैं" में विभाजन-कई विभाजन.......

किसी स्वामी-मालिक के "मैं" की ही बात करें तो उस "मैं" के अन्दर इस कदर द्वन्द्व हैं कि उसे स्वामी-मालिक बनाये रखने के लिये अनेक भोगों के संग योग की आवश्यकता पड़ती है.... टूटे को जोड़ना लक्षणों का उपचार करना है, बीमारी को छिपाना है। और, संकीर्ण अर्थ में स्वास्थ्य की ही बात करें तो भी प्रश्न है : स्वास्थ्य किस लिये ? स्वास्थ्य से खिलवाड़ करती सामाजिक प्रक्रिया शोषण के लिये स्वास्थ्य के महत्व को बखूबी जानती है.......

● मानव समुदायों में से जो समुदाय स्वामी गण बने थे वे स्वाभाविक तौर पर समुदायों की गहरी छाप लिये थे। इसने सभ्यता के बारे में अनेक भ्रान्तियों को भी जन्म दिया है। स्वामी गण के दौर को सतयुग कहने वालों के लिये यह बात पर्याप्त होनी चाहिये कि दास-दासी गण के सदस्य नहीं थे, दास-दासियों का शोषण स्वामी गणतन्त्रों की चमक-दमक का आधार था।

स्वामी गण के "हम" में से "मैं" के उदय को पतन के तौर पर देखने की परिपाटी के लिये भी उपरोक्त पर्याप्त होना चाहिये। "हम" और "वे-अन्य" का अगला कदम "हम-मैं", "मैं-हम" "मैं" है......

"मैं" के संग "मेरा-मेरी" हैं। यहाँ हम स्वामियों-मालिकों के आचार-विचार की ही चर्चा कर रहे हैं क्योंकि दास-दासियों के "मैं" और "मेरा-मेरी" के लिये कोई स्थान ही नहीं था। लेकिन बँटे हुये समाज में सिर-माथों पर बैठों का प्रभाव नीचे वालों पर पड़ता-डाला जाता है। कहा है कि किसी दौर की हावी सोच उस दौर के शासक वर्ग की सोच होती है..... **(बाकी पेज दो पर)**

माँ शक्ति, देवी के गले में नर-मुण्डों की माला, पिता के आदेश पर माँ का सिर काटना वाली पौराणिक कथायें नर-नारी सम्बन्धों में हुये

मजदूर लाइब्रेरी, आटोपिन झुग्गी, एन. आई. टी. फरीदाबाद – 121001 (यह जगह बाटा चौक और मुजेसर के बीच गंदे नाले की बगल में है।)

दर्पण में चेहरा—दर—चेहरा

चेहरे डरावने हैं.... आईना ही नहीं देखें या फिर हालात बदलने के प्रयास करें?

प्रणव विकास मजदूर : "45-46 इन्डस्ट्रीयल एरिया स्थित फैक्ट्री में जुलाई की तनखा हैल्परों को 3510 रुपये दी है। फैक्ट्री की पेन्ट शॉप में हालात बहुत खराब हैं — 17 अगस्त को एक मजदूर को इतनी खाँसी आई कि बेहोश हो कर गिर गया। साहबों को पेन्ट साफ करवाने, एग्जास्ट ठीक करवाने, ढँग के मास्क, टॉनिक के लिये कहते हैं तो वे 'करना है तो करो नहीं तो जाओ' बोलते हैं।"

पैरामाउन्ट पोलीमर्स वरकर : "सैक्टर-59 पार्ट-बी झाड़सेंतली-जाजरू रोड़ स्थित फैक्ट्री में 11 अगस्त को परसनल वाले ने गेट पर जुलाई तनखा के 3510 तथा 3640 रुपये पर हस्ताक्षर करवाये और कहा कि तनखा ले आओ। अन्दर हमें 2000-2500-3000 रुपये दिये। इस पर हम चेयरमैन-मैनेजिंग डायरेक्टर कुलभूषण खुराणा से मिले तो उन्होंने सोमवार, 13 अगस्त को मिलने को कहा। सोमवार को वे बोले कि मैं इस्तीफा दे चुका हूँ, टैक्नीकल हैड सुरेन्द्र शर्मा से बात करो......

"श्री कुलभूषण खुराणा वृद्ध हैं, रोज फैक्ट्री आते हैं और 10-12 घण्टे रहते हैं। उत्पादन बढवाने के लिये हमारे सिर पर खड़े रहते हैं, पानी-पेशाब के लिये गये मजदूर की जगह खुद दाब खांल देते हैं। आधी मिनट तक का समय देखते हैं — एक डाई में एक सैकेन्ड बचा है इसलिये 12 घण्टे में इतने मिनट हुये इसलिये इतनी डाई बढाओ...... वाले इन बड़े साहब के पास हम पैसे बढाने, साबुन, वेतन में देरी के बारे में जाते हैं तो कहते हैं कि मैंने इस्तीफा दे दिया है, 3-4 साल से यह बातें। और, टैक्नीकल हैड सब को, सुपरवाइजर-वरकर को गाली देता है।

"पैरामाउन्ट पोलीमर्स फैक्ट्री में एल जी, सैमसंग, व्हर्लपूल फ्रिज के रबड़ के पुर्जे बनते हैं। इस समय 8-8 घण्टे की दो शिफ्ट हैं पर दिवाली से मई माह तक 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट रहती हैं और जबरन 36 घण्टे भी रोकते हैं। ओवर टाइम के महीने में 150-200 घण्टे .....सर्दियों में तो 275-300 घण्टे प्रतिमाह हो जाते हैं। स्थाई मजदूरों की पे-स्लिप में ओवर टाइम दिखाते ही नहीं। ओवर टाइम के पैसे दूसरे कागज पर देते हैं, उसमें भुगतान दुगुनी दर से लिखा होता है पर देते सिंगल रेट से हैं। स्थाई मजदूरों और कैजुअल वरकरों की तनखायें बराबर हैं पर कैजुअलों की 6 महीने ई.एस.आई. व पी.एफ. काटते हैं, फिर 6 महीने बन्द कर देते हैं..... इस प्रकार 5-6 साल से लगातार फैक्ट्री में काम कर रहे कैजुअल हैं। इधर डेढ़ साल से पुराने कैजुअलों को निकालना शुरू कर रखा है। फैक्ट्री में सबसे ज्यादा शिकायत टी.बी. की है।"

मार्क लैम्प मजदूर : "बघौला गाँव स्थित पेन्ट बनाने की फैक्ट्री में काम करते 100 वरकरों में ई.एस.आई. व पी.एफ. 10-15 की ही हैं। जुलाई की न्यूनतम तनखा 3510-4160 की बजाय हैल्परों को 2100-2200 रुपये और ऑपरेटरों को 3000-3200 रुपये दी गई।"

एस्कोर्ट्स वरकर : "फस्ट प्लान्ट में बीस से ज्यादा ठेकेदारों के जरिये रखे 400 मजदूरों में अधिकतर हैल्परों को जुलाई की तनखा 3510 रुपये दी परन्तु राकेश इन्टरप्राइजेज के जरिये पाउडर कोटिंग वाले हम 18 मजदूरों को 85,90,95 रुपये दिहाड़ी के हिसाब से तनखा दी है। और, पहले हमारी तनखा से ई.एस.आई. व पी.एफ. के 300-325 रुपये काटते थे पर जुलाई की तनखा में से 400 रुपये काटे हैं।"

इनवैक्स मजदूर : "14/3 मथुरा रोड़ स्थित फैक्ट्री में 500 वरकर थे, अब 200 हैं.... कहा था 130 रुपये दिहाड़ी, बना दिया पीस रेट जिससे 2000 रुपये महीना पड़ा, मजदूर छोड़ कर चले गये। एक अधिकारी, सुश्री पूनम गुप्ता फैक्ट्री आती हैं तब साहब लोग कुछ मजदूरों को सिखाते हैं कि क्या बोलना है.... जिन से मैडम पूछती हैं उन्हें फिर कम्पनी 500 रुपये देती है। पीने के पानी की भारी दिक्कत है। ई.एस.आई. के लिये फोटो खिंचाई के 90 रुपये तनखा से काट लिये!"

वी जी इन्डस्ट्रीयल इन्टरप्राइजेज वरकर: "31 इन्डस्ट्रीयल एरिया स्थित फैक्ट्री में मारुति सुजुकी वाहनों के पुर्जे बनते हैं और इन्हें गुड़गाँव फैक्ट्री में पहुँचाने के लिये हर समय गाड़ियों का आना-जाना लगा रहता है। बहुत ज्यादा माल चाहिये और हर हाल में समय पर चाहिये — हम मजदूरों पर उत्पादन का भारी दबाव रहता है। पानी-पेशाब में भी दिक्कत — सुपरवाइजर पीछे-पीछे आ जाते हैं। फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं। ड्युटी मे 12 घण्टे पैक — शरीर के सब अंग ढीले हो जाते हैं। रात को 12 घण्टे काम के बाद सुबह छूटने वाले अध्धा पी कर निकले लगते हैं। एक्सीडेन्ट....

"पावर प्रेस विभाग सड़क से दिखाई देता है — बड़ी 15 और छोटी 20 हाइड्रोलिक प्रेस यहाँ हैं, बहुत छोटी 20 पावर प्रेस डिलाइट बैंक्वेट के पीछे हैं। प्रेसों पर उत्पादन मीटर लगा रखे हैं — जहाँ 2 ऑपरेटर हैं वहाँ 12 घण्टे में कम से कम 3600 माल चाहिये, नहीं तो बाहर। इसलिये ऑपरेटर अपनी नौकरी बचाने के लिये हर समय हैल्परों के सिर पर सवार रहते हैं। ऑपरेटर माल लगाता और स्ट्रोक मारता है, हैल्पर माल निकालता है। ऐसे में हाथ तो रोज चिरते ही हैं, मुँह में चोट लगना सामान्य है। महीने में पावर प्रेसों पर एक हाथ तो कट ही जाता है, ज्यादा हाथ पहुँचे से कटते हैं, हाथ ज्यादा हैल्परों के कटते हैं। हाथ कटने पर ई.एस.आई. अस्पताल भेज देते हैं और फिर निकाल देते हैं। एक्सीडेन्ट होने के बाद आधा घण्टा भोजन अवकाश में सुपरवाइजर काख में भोंपू टाँग कर सुरक्षा पर भाषण देते हैं, बड़ी-बड़ी बातें करते हैं और हमारे भोजन के आधे घण्टे में से 15-20 मिनट खा जाते हैं।

"तीन महीने हुये एक दिन ड्युटी पर पहुँचा तो ऑपरेटर के हृदय में तकलीफ देखी और मेरे बताने पर अस्पताल ले गये। फिर सुपरवाइजर मुझे बोला कि मशीन चलाओ। डाई खून से लथपथ थी। बाथरूम के पास कपड़े से ढका कटा हाथ देखा। सुपरवाइजर बोला कि खून साफ कर मशीन चलाओ। मैंने मना कर दिया। हैल्पर हूँ, डर गया हूँ, मेरा दिल घबरा गया है..

"वी जी इन्डस्ट्रीयल में मजदूर लगते-निकलते रहते हैं। लगने के बाद महीना पूरा होने का इन्तजार करते हैं। पहले 4 तारीख को तनखा देते थे, अब 9 को देते हैं — 10 दिन के पैसे फँसा कर रखते हैं ताकि मजदूर नौकरी छोड़ नहीं सकें, छोड़ने पर हिसाब बहुत मुश्किल से देते हैं। फैक्ट्री में काम करते 1000 मजदूरों में स्थाई 200 से कम हैं और बाकी सब को दो ठेकेदारों के जरिये रखते हैं।"

सुपर स्क्रूज मजदूर : "प्लॉट 30 सैक्टर-24 स्थित फैक्ट्री में हम 250 वरकर 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट में काम करते हैं। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से.... परन्तु जुलाई के प्रतिदिन के 4 घण्टों को मैनेजमेन्ट ने 2 बना दिया है। इस प्रकार हैल्पर को 10 घण्टे रोज ड्युटी पर कम्पनी ने जुलाई के 3510 रुपये दिये हैं।"

पहचान..... *(पेज एक का शेष)*

उलटफेर दर्शाती लगती हैं। यह न भूलते हुये कि स्वामी-मालिक की पत्नी-बेटी दास-दासियों के लिये स्वामी ही थी, बात आगे बढाते हैं।

"मैं" और "मेरा-मेरी" का विस्तार नारी की-बच्चों की दुर्गत तो लिये ही है, यह पुरुषों का भी कचूमर निकालता है। "मैं" और "मेरा-मेरी" के लिये सुरक्षा का प्रश्न अपने संग सरकार और उसका बढता बोझ लिये है। "मेरा-मेरी" की सुरक्षा तथा इनके विस्तार की इच्छायें पहचान की राजनीति की खुराक तो बनती ही हैं।

सम्पत्ति और परिवार के रूप में "मेरा-मेरी" किसानी-दस्तकारी-दुकानदारी के विस्तार के दौरान महामारी का रूप ले लेती है। लेकिन इधर सम्पत्ति द्वारा संस्थागत रूप धारण करते जाना और बढती सँख्या में स्त्रियों का मजदूर बनना सभ्यता के विलोप तथा नये समुदायों की आवश्यकता की दस्तक लगती है....

संस्थाओं-कम्पनियों के बड़े घपलों-घोटालों के संग एशिया-अफ्रीका-दक्षिणी अमरीका में सामाजिक मौत-सामाजिक हत्या से रूबरू दस्तकारों-किसानों-दुकानदारों की "मेरा-मेरी" की बदहवासी फुटकर भ्रष्टाचार की बाढ लाई है। और यूरोप-उत्तरी अमरीका में संस्थाओं ने "मेरा-मेरी" वाले आवरणों को हड़प कर "मैं" को पूरी वीभत्सता के साथ सामने ला दिया है।

प्रकृति में स्त्री की यौन-सम्बन्धी क्षमता कई पुरुषों के बराबर है। एक पुरुष एक स्त्री की भी यौन सन्तुष्टि नहीं कर सकता....... ऐसे में एक पुरुष द्वारा कई स्त्रियाँ-पत्नियाँ रखना "मैं" की पीड़ा का ही कमाल रहा है। "मैं" के उदय के संग स्त्री-पुरुष में आरम्भ हुये सतत द्वन्द्व की चर्चा आगे करेंगे। (जारी)

प्रतिदिन 8 घण्टे काम और सप्ताह में एक दिन की छुट्टी पर 01.07.2007 से हरियाणा सरकार द्वारा ***निर्धारित कम से कम तनखा प्रतिमाह इस प्रकार हैं***: *अकुशल मजदूर (हैल्पर) 3510 रुपये (8 घण्टे के 135 रुपये); अर्धकुशल अ 3640 रुपये (8 घण्टे के 140 रुपये); अर्धकुशल ब 3770 रुपये (8 घण्टे के 145 रुपये); कुशल श्रमिक अ 3900 रुपये (8 घण्टे के 150 रुपये); कुशल श्रमिक ब 4030 रुपये (8 घण्टे के 155 रुपये); उच्च कुशल मजदूर 4160 रुपये (8 घण्टे के 160 रुपये)। सामान्य स्टाफ में दसवीं से कम 3640 रुपये (8 घण्टे के 140 रुपये); 14वीं से कम 3900 रुपये (8 घण्टे के 150 रुपये); स्नातक 4160 रुपये (8 घण्टे के 160 रुपये); हलका वाहन चालक 3900 रुपये (8 घण्टे के 150 रुपये); भारी वाहन चालक 4160 रुपये (8 घण्टे के 160 रुपये); सुरक्षा गार्ड बिना हथियार 3640 रुपये (8 घण्टे के 140 रुपये)।* ***कम से कम का मतलब है इन से कम तनखा देना गैरकानूनी है। वैसे इन तनखाओं में मजदूर अपने बच्चों को ढँग का पाव-पाव दूध और माता-पिता को ढँग की दाल नहीं खिला सकते।***

एक छोटा-सा कदम : **अगर आपको ऊपर दर्शाये न्यूनतम वेतन नहीं दिये जा रहे तो कम्पनी-फैक्ट्री-कार्यस्थल का पता देते हुये इन साहबों को पत्र भेजें:**

1. श्रीमान उप श्रम आयुक्त
पुराना ए डी सी दफ्तर, सैक्टर-15ए
फरीदाबाद - 121007
2. श्रीमान श्रम आयुक्त, हरियाणा सरकार
30 वेज बिल्डिंग, सैक्टर-17, चण्डीगढ
3. **श्रीमान श्रम मन्त्री,
हरियाणा सचिवालय
चण्डीगढ**
4. **श्रीमान मुख्य मन्त्री,
हरियाणा सचिवालय, चण्डीगढ**

दरारें और कोशिशें ...... *(पेज चार का शेष)*

गये। 'हिसाब दे दो' के उत्तर में **'हिसाब नहीं लेंगे' कह कर वरकर साँय 5 बजे शिफ्ट** समाप्ति तक फैक्ट्री में बैठे रहे। **दस अगस्त को सुबह 8½ बजे फैक्ट्री में जाने से रोका** तो कैजुअल वरकर गेट पर बैठ गये.... **श्याम एलॉयज में 40 स्थाई, 50 कैजुअल, पाँच** ठेकेदारों के जरिये रखे 100, तथा **100 पीस रेट वाले मजदूर काम करते हैं।** ठेकेदार बराये नाम के हैं और इन में 3 तो **स्थाई मजदूर हैं** जिनमें एक युनियन नेता भी है। बहलाने-फुसलाने-तोड़ने वालों ने 15 **कैजुअल वरकरों को हिसाब के** लिये मना लिया और 15 को 100-200 **रुपये अलग से देने की** कह कर फैक्ट्री में ले गये। फिर भी 20 कैजुअल वरकर शाम तक **फैक्ट्री गेट पर थे और** 11 अगस्त को डी.सी. कार्यालय जाने की कह रहे थे।"

महारानी पेन्ट्स वरकर : "प्लॉट 343-344 सैक्टर-24 स्थित फैक्ट्री में 7 अगस्त को जुलाई की तनखा 2554 रुपये के **हिसाब से देने लगे तो 2-3 ने ले ली पर फिर** ठेकेदार के जरिये रखे हम सब वरकरों ने पैसे लेने से मना कर काम बन्द कर दिया। प्लॉट 242 मजदूरों के कदम का हमें पता चल गया था। हमारे द्वारा काम बन्द करने से फैक्ट्री में उत्पादन बन्द हो गया। स्थाई मजदूर यूनियन में हैं और उनके नेता जनरल मैनेजर के पास गये तो साहब ने चेयरमैन-मैनेजिंग डायरेक्टर बलदेव राज भाटिया से बात की। बड़े साहब द्वारा 3510 देने की कहने पर नये सिरे से कागज तैयार कर 9 अगस्त को हमें 3510 रुपये तनखा दी। फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं और ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से देते हैं – जुलाई के लिये यह 3510 के हिसाब से दिये।"

टालब्रोस मजदूर : "प्लॉट 75 सैक्टर-6 स्थित फैक्ट्री में 10 अगस्त को जुलाई की तनखा 2000 रुपये के हिसाब से देने लगे तो हैल्परों ने काम बन्द कर दिया और 3510 माँगे। हैल्परों ने 10 से 22 अगस्त तक काम बन्द रखा..... 16-17 अगस्त को पुलिस फैक्ट्री में आई और साहबों से मिल कर चली गई; श्रम विभाग को दी 190 हैल्परों की सूची पर कम्पनी ने कहा कि वे टालब्रोस फैक्ट्री में काम करने वाले मजदूर नहीं हैं; कम्पनी और श्रम विभाग में भाईचारा..... 190 हैल्परों ने नौकरी छोड़ दी। टालब्रोस फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं और कम्पनी ने 12 घण्टे रोज पर 30 दिन के 3510 रुपये कह कर नये हैल्पर भर्ती किये हैं।" ***टालब्रोस वरकर :*** "प्लॉट 60 सैक्टर-6 स्थित फैक्ट्री में हैल्परों को जुलाई की तनखा 3510 रुपये दी। प्लॉट 75 वाली से अलग है...."

आहूजा प्लास्टिक उद्योग मजदूर : "20ए/17 इन्डस्ट्रीयल एरिया स्थित फैक्ट्री में 300 रुपये तनखा में बढाने के लिये हम पुरुष मजदूरों ने 5 जून को काम बन्द किया – महिला मजदूर भी काम बन्द करना चाहती थी पर हम ने यह कह कर मना किया कि हम तो कहीं कमा लेंगे, उन्हें परेशानी होगी। डायरेक्टर 200 रुपये ही बढाने पर अड़ा रहा तब हम ने 9 जून को काम शुरू किया.... हम से लिखवाया कि हम बिना बताये छुट्टी पर थे।" (इन मजदूरों की बाकी बातें अगले अंक में)

गुड़गाँव से ...... *(पेज चार का शेष)*

किसी के नहीं।" ***मैगसन एक्सपोर्ट वरकर :*** "प्लॉट 41-42 उद्योग विहार फेज-4, गुड़गाँव स्थित फैक्ट्री में 700 मजदूर थे। काम कम होने पर वैसे ही निकाल दिये और इस समय हम 300 हैं पर ई.एस.आई. तथा पी.एफ. 100 की ही हैं। जुलाई की तनखा हैल्परों को 3510 की बजाय 2500 रुपये ही दी।" ***पर्ल ग्लोबल मजदूर :*** "प्लॉट 870 उद्योग विहार फेज-5 स्थित फैक्ट्री 15 अगस्त को बन्द कर दी। चार हजार मजदूर थे। पहले पे-स्लिप देते थे पर अगस्त के 15 दिन की नहीं दी – सिलाई कारीगरों को तनखा 4000 रुपये बताई थी पर दी 2850 के हिसाब से।"

गौरव इन्टरनेशनल वरकर : "प्लॉट 151, 193, 198, 208, 225, 236, 506.... उद्योग विहार फेज-1 में, गुड़गाँव में कम्पनी की 18 फैक्ट्रियों में 3510-4160 न्यूनतम वेतन की बजाय जुलाई की तनखा 2554-2900 रुपये दी।" ***वी एन टैक्स,*** 301 उद्योग विहार फेज-2 में 400 में 300 कैजुअल वरकर, जुलाई की तनखा हैल्परों को 2554 रुपये; ***साडू इन्टरनेशनल,*** 321 उद्योग विहार फेज-5 में ठेकेदार के जरिये रखे 200 मजदूरों में से हैल्परों को जुलाई की तनखा 2000-2200 रुपये; ***गेट पर नाम नहीं,*** 49 उद्योग विहार फेज-1 में 100 वरकरों में से 2-4 की ही ई.एस.आई. व पी.एफ., जुलाई की तनखा हैल्परों को 2400 और कारीगरों को 2600-2700 रुपये; ***मोडलामा एक्सपोर्ट,*** 184, 200, 201 उद्योग विहार फेज-1 में जुलाई की तनखा हैल्परों को 2554 तथा कारीगरों को 3000 रुपये, 184 में सुबह 9½ से 6-8-2 बजे रात तक ड्युटी और ओवर टाइम के पैसे सिंगल, डेढ, दुगुनी दर से, साहब गाली बहुत देते हैं; ***शम्भु इन्टरप्राइज,*** 30 उद्योग विहार फेज-2 में स्टाफ ही स्थाई, तीन ठेकेदारों के जरिये रखे 150 मजदूरों में हैल्परों को जुलाई की तनखा 2554 रुपये; ***ज्योति एपरेल्स,*** 159 उद्योग विहार फेज-1 में 300 मजदूरों में 10 की ही ई.एस.आई. व पी.एफ., सुबह 9 से रात 8 तक की शिफ्ट और ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से, जुलाई की तनखा हैल्परों को 2554 रुपये और कारीगरों को 110 रुपये दिहाड़ी के हिसाब से; ***मोना डिजाइन,*** 146 उद्योग विहार फेज-1 में जुलाई की तनखा हैल्परों को 2400 और कारीगरों को 3300 रुपये; ***भारत इन्टरप्राइज,*** 189 उद्योग विहार फेज-1 में हैल्परों को जुलाई की तनखा 2500 रुपये; ***इनकास इन्टरनेशनल,*** 142 उद्योग विहार फेज-1 में जुलाई की तनखा 2554 रुपये; ***मोहन क्लोथिंग,*** 76 उद्योग विहार फेज-1 में जुलाई की तनखा 2554 रुपये; ***लारा एक्सपोर्ट,*** 155 उद्योग विहार फेज-1 में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट, 5 ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूरों में हैल्परों को जुलाई की तनखा 2800 रुपये।

मजदूर समाचार में सांझेदारी के लिये :

★अपने अनुभव व विचार इसमें छपवा कर चर्चाओं को कुछ और बढवाइये। नाम नहीं बताये जाते और अपनी बातें छपवाने के कोई पैसे नहीं लगते। ★ बाँटने के लिये सड़क पर खड़ा होना जरूरी नहीं है। दोस्तों को पढवाने के लिये जितनी प्रतियाँ चाहियें उतनी मजदूर लाइब्रेरी से हर महीने 10 तारीख के बाद ले जाइये। ★ बाँटने वाले फ्री में यह करते हैं। सड़क पर मजदूर समाचार लेते समय इच्छा हो तो बेझिझक पैसे दे सकते हैं। रुपये-पैसे की दिक्कत है।

महीने में एक बार छापते हैं, 5000 प्रतियाँ फ्री बाँटते हैं। मजदूर समाचार में आपको कोई बात गलत लगे तो हमें अवश्य बतायें, अन्यथा भी चर्चाओं के लिए समय निकालें।

***डाक पता : मजदूर लाईब्रेरी,
आटोपिन झुग्गी,
एन.आई.टी. फरीदाबाद—121001***

गुड़गाँव से - दरारें और कोशिशें

डेल्फी मजदूर : "42 मील पत्थर दिल्ली-जयपुर मार्ग, गुड़गाँव स्थित फैक्ट्री में ***चार ठेकेदारों के जरिये रखे हम मजदूरों ने 3 अगस्त को दोपहर बाद 3½ बजे चाणचक्क काम बन्द कर दिया।*** हम 2500 हैं और फैक्ट्री में काम करते मजदूरों का हम नब्बे प्रतिशत हैं। इस वर्ष जनवरी में हम ने चाणचक्क काम बन्द किया तब 250 स्थाई मजदूरों ने काम जारी रखा था पर फिर भी फैक्ट्री में दो दिन उत्पादन ठप्प रहा था। इस बार, 3 अगस्त को हमारे द्वारा चाणचक्क काम बन्द करने पर मैनेजमेन्ट ने बहुत तेजी से कार्रवाई की। कम्पनी के मैनेजिंग डायरेक्टर ने साँय 5 बजे फैक्ट्री में ए और बी शिफ्ट के सब मजदूरों की सभा की। बड़े साहब ने अनुशासन तोड़ना बरदाश्त नहीं करने, फैक्ट्री को ताला लगाने, फैक्ट्री पुणे ले जाने वाली धमकियाँ दी पर इनका ठेकेदारों के जरिये रखे हम वरकरों पर कोई प्रभाव पड़ ही नहीं सकता। साहबों की यह बातें तो स्थाई मजदूरों को ही डरा सकती हैं और उन्होंने तो काम बन्द नहीं किया था, काम बन्द तो हम ने किया था। डेल्फी फैक्ट्री में ठेकेदारों के जरिये रखे हम मजदूरों के सम्मुख समस्या ही समस्या है..... मैनेजिंग डायरेक्टर को हमारी बातें सुननी पड़ी। और फिर, 6 अगस्त को हमें जुलाई की तनखा दी गई तो 3510 की बजाय प्रत्येक की तनखा 3640 रुपये लगाई गई तथा इनमें 800 रुपये उपस्थिति भत्ता, 3 महीने से काम कर रहों को 300 रुपये अतिरिक्त, 6 महीने वालों को 200 रुपये और, प्रतिवर्ष पर 100 रुपये जोड़े गये। ***जिस फैक्ट्री में 2554 रुपये वाला न्यूनतम वेतन भी नहीं दिया जा रहा था वहाँ जुलाई की तनखा पाँच हजार रुपये! लेकिन कोई चमत्कार नहीं है यह।***

"गुड़गाँव में डेल्फी फैक्ट्री 1995 से है। आरम्भ में भर्ती कियों को स्थाई किया, स्थाई मजदूर 750 हो गये तब मैनेजमेन्ट-यूनियन की माँगपत्र-तालाबन्दी वाली जुगलबन्दी के जरिये 2002-03 में 500 स्थाई मजदूरों की छँटनी की गई और ठेकेदारों के जरिये वरकर रखे जाने लगे। स्थाई मजदूर की 8-10 हजार रुपये की तुलना में 2428 रुपये तनखा जिसमें 300 रुपये उपस्थिति भत्ता.... चार ठेकेदारों के जरिये रखे जाते हम सब नई उम्र के हैं और आपस में तालमेल कर लेते हैं। इस वर्ष जनवरी में तनखा बढवाने के लिये एक दिन हम सब फैक्ट्री के अन्दर जाने की बजाय गेट पर बैठ गये। हमारे द्वारा चाणचक्क यह करने से कम्पनी हड़बड़ा गई थी। ढाई सौ स्थाई मजदूर फैक्ट्री में काम करते रहे थे पर उत्पादन ठप्प-सा रहा था। स्थाई मजदूर ही यूनियन में हैं और दो दिन बाद यूनियन नेता आश्वासन दे कर हमें फैक्ट्री में ले गये थे। फिर मैनेजमेन्ट ने हम में से 'भड़काने वाले' छाँटने की कोशिशें की, हम में से कईयों को निकाला और नये भर्ती किये। लेकिन बात तो किन्हीं 'भड़काने वालों' की थी नहीं, है नहीं। फैक्ट्री में काम ही कोढ है और फिर जबरन ओवर टाइम, घण्टों में हेराफेरी, प्रोविडेन्ट फण्ड में गबन, उपस्थिति भत्ते की आड़ में न्यूनतम वेतन भी नहीं आदि-आदि वाली खाज जारी थी कि 3510 वाला न्यूनतम वेतन नये सिरे से हेराफेरियों का सिलसिला लाया। हम ने हरियाणा सरकार के श्रम आयुक्त, श्रम मन्त्री, मुख्य मन्त्री को पत्र लिखे। हम ने आपस के तालमेल बढाये और 3 अगस्त को चाणचक्क काम बन्द किया...... तब ऊपर बताया 'चमत्कार' हुआ।" *(वाहनों के पुर्जे बनाती डेल्फी कम्पनी की संसार में 160 फैक्ट्रियों में एक लाख अस्सी हजार मजदूर काम करते हैं।)*

कैपरिकोन एपरेल्स वरकर : "बी-14 सैक्टर-34 गुड़गाँव स्थित फैक्ट्री में कम्पनी द्वारा स्वयं भर्ती 50 मजदूरों में हैल्परों की तनखा 2250 रुपये और ई.एस.आई. तथा पी.एफ. की राशि इन 2250 में से काटते हैं। दो ठेकेदारों के जरिये रखे 150 मजदूरों में हैल्परों की तनखा 2000 रुपये व कारीगर पीस रेट पर — ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं। तनखा देरी से — जुलाई का वेतन आज 31 अगस्त तक नहीं दिया है।"

ऋचा ग्लोबल मजदूर : "प्लॉट 192, 193, 232, 239 उद्योग विहार फेज-1, गुड़गाँव स्थित कम्पनी की फैक्ट्रियों में 3510-4160 रुपये न्यूनतम वेतन भी नहीं दिये — जुलाई की तनखा हैल्परों को 2554 तथा कारीगरों को 2900 रुपये दी और ठेकेदार इन में से भी 200-300 रुपये खा गये। प्लॉट 192 में साहब गाली देते हैं। प्लॉट 232 में फिनिशिंग में रात 7 से 3 बजे वाली शिफ्ट में बहुत दिक्कत.... अभी काम कम है इसलिये रोज ओवर टाइम पर नहीं रोकते। अक्टूबर से अप्रैल के दौरान प्रोडक्शन विभाग में सुबह 9 से साँय 6½ वाली शिफ्ट रात 8½ तक, 10 तक, शिपमेन्ट के समय 24 घण्टे की रहती है। कम्पनी के रोल पर जो हैं उन्हें ओवर टाइम का भुगतान दुगुनी दर से पर पी.एफ. में महीने में 10 घण्टे से ज्यादा ओवर टाइम दिखाते नहीं हैं। ठेकेदारों के जरिये रखों को ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से।"

कलमकारी एक्सपोर्ट वरकर : "प्लॉट 280 उद्योग विहार फेज-2, गुड़गाँव स्थित फैक्ट्री में दो ठेकेदारों के जरिये रखे 300 मजदूरों में से हैल्परों को जुलाई की तनखा 1800-2200 रुपये दी और सिलाई कारीगरों को 120 रुपये दिहाड़ी के हिसाब से .... कम्पनी ने 3510-4160 रुपये न्यूनतम वेतन की लिस्ट लगाई और फिर हटा दी। सुबह 9½ से रात 8 तक की एक शिफ्ट है। कम्पनी द्वारा स्वयं रखों को ओवर टाइम का भुगतान डेढ की दर से और ठेकेदारों के जरिये रखों को सिंगल रेट से। कैन्टीन में चाय 3 रुपये में लिख रखा है पर चाय देते ही नहीं हैं।"

विभा ग्लोबल मजदूर : "प्लॉट 413 उद्योग विहार फेज-3, गुड़गाँव स्थित फैक्ट्री में जुलाई की तनखा 25 अगस्त को जा कर दी.... चार ठेकेदारों के जरिये रखे 350 वरकरों में हैल्परों की तनखा 2200 रुपये और कारीगरों की 2800 — ई.एस.आई. तथा पी.एफ. *(बाकी पेज तीन पर)*

महारानी पेन्ट्स मजदूर : "प्लॉट 242 सैक्टर-24 स्थित फैक्ट्री में 7 अगस्त को जुलाई की तनखा देते समय हस्ताक्षर 3510 तथा 2554, दोनों पर करवा रहे थे और दे 2554 रुपये थे। एक-दो ने पैसे ले भी लिये थे पर फिर हम सब काम बन्द कर बैठ गये। एक घण्टे बाद जनरल मैनेजर आया और बोला कि तनखा 3510 रुपये देंगे.... 9 अगस्त को हम ने 3510 रुपये लिये।"

सेन्डेन विकास वरकर : "प्लॉट 65 सैक्टर-27ए स्थित फैक्ट्री में 7 अगस्त को एक ठेकेदार 3510 पर हस्ताक्षर करवा कर 2554 रुपये देने लगा तो मजदूरों ने पैसे लेने से इनकार कर दिया। फिर 9-10 अगस्त को ठेकेदारों ने जुलाई की तनखा 3510 रुपये दी। महीने में वाहनों के 25 हजार एयरकन्डीशनर किट तैयार करती फैक्ट्री में 70 स्थाई मजदूर और तीन ठेकेदारों के जरिये रखे 250 वरकर काम करते हैं। स्थाई का ओवर टाइम कम ही लगता है पर ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूर प्रतिमाह 150-200 घण्टे ओवर टाइम करते हैं जिनका भुगतान दुगुनी दर की बजाय सिंगल रेट से किया जाता है। स्थाई मजदूर की तनखा 8000-18000 रुपये (15 वर्ष से किसी वरकर को स्थाई नहीं किया है) और जून 07 तक ठेकेदारों के जरिये रखों की 2554 रुपये.... कैन्टीन में स्थाई को भोजन 5 रुपये में और ठेकेदारों के जरिये रखों को 15 रुपये में। सेन्डेन विकास का मैनेजिंग डायरेक्टर भारत सरकार का नागरिक है और संयुक्त प्रबन्ध निदेशक जापान सरकार का नागरिक। फैक्ट्री में होज एण्ड पाइप विभाग तो बीमारियों का घर है — धूल रहित रखने के फेर में तीसरी मंजिल पर स्थित इस विभाग में न दरवाजा है, न खिड़की है..... सिर्फ एक जीना है। ऑक्सीजन की कमी के कारण हर मजदूर बीमार है — मैनेजमेन्ट से खिड़कियों के लिये कई बार कहा है और मात्र आश्वासन मिला है। आधे मजदूर होज एण्ड पाइप में काम करते हैं और ज्यादा ओवर टाइम भी इसी विभाग में होता है।"

पुनीत उद्योग मजदूर : "प्लॉट 37 ई सैक्टर-6 स्थित फैक्ट्री में ***पाँच भाई साबुन*** बनाते हम हैल्परों ने जुलाई की तनखा आज 22 अगस्त तक नहीं ली है क्योंकि कम्पनी 3510 की बजाय 2554 रुपये दे रही है।"

पेप्सी ड्राइवर : "प्लॉट 27 सैक्टर-24 में पेप्सी कम्पनी ने एक ठेकेदार के जरिये हम 54 ड्राइवर व हैल्पर रखे हैं। जुलाई की तनख़ा देते समय हम सब से हस्ताक्षर 3510 पर करवाये लेकिन दिये 2500 रुपये। इसके विरोध में आज 22 अगस्त को हम सब ने छुट्टी करने का तय किया है।"

श्याम एलॉयज वरकर : "प्लॉट 40 सैक्टर-6 स्थित फैक्ट्री में 9 अगस्त को जुलाई की तनखा 2450 रुपये देने लगे तो 50 कैजुअल वरकरों ने 3510 माँगे। 'नहीं दे सकते' पर 'काम नहीं करेंगे' कह कर कैजुअल वरकर 3 बजे तनखा बँटने के समय काम बन्द कर बैठ *(बाकी पेज तीन पर)*

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं सम्पादक शेर सिंह के लिए जे० के० आफसैट दिल्ली से मुद्रित किया।

RN 42233 पोस्टल रजिस्ट्रेशन L/HR/FBD/73